रसूल स0 की बेटी

लेखक : मौलाना रज़ीउद्दीन हैदर साहब, इलाहाबाद किस्त : 01

''अरब देश में जनाब फातेमा की पैदइश से पहले''

पुत्रियों! बचपन में तुम्हारे माता–पिता ने अवश्य ही बताया होगा कि तौहीद और रेसालत किसे कहते हैं?

तौहीद इस्लाम मज़हब का पहला सिद्धान्त है इसका अर्थ यह है कि सारे संसार का जन्म दाता और पालन पोषण करने वाला एक है जिसे हम अल्लाह कहते हैं।

दूसरे नुबूवत यानी उसी अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए एक लाख चौबीस हज़ार नबी (दूत) भेजे जिन्होंने संसार में आकर अच्छे कामों को करने का आदेश दिया और बुरे काम करने को मना किया।

सबसे प्रथम नबी हज़रत आदम अ0 थे जो सबसे पहले व्यक्ति थे, और सबसे अन्तिम नबी हमारे रसूल जनाब मोहम्मद मुस्तुफा स0 हैं। हज़रत ने इस धरती पर आकर इस्लाम धर्म की शिक्षाएं दीं जो हज़रत आदम अ0 के समय से ही मनुष्य के लिए भेजा गया था।

उन्होंने धर्म की सभी अच्छी अच्छी बातों को लोगों तक पँहुचाया, समझाया और खुद उनपर चले।

जिस समय हमारे रसूल अरब देश में पैदा हुए अनेक प्रकार की बुराइयां फैली थीं, लोग बिल्कुल जंगली, असभ्य और अशिक्षित थे, उन को सोचने समझने की बुद्धि ही न थी यहां तक कि वह अपने पैदा करने वाले प्रभु (खुदा) को भी नहीं जानते थे। वह हर समय छोटी छोटी बातों को लेकर आपस में लड़ते और एक दूसरे के जान के प्यासे बने रहते थे। उन लोगों में सबसे बड़ी ख़राबी यह थी कि वे अपनी लड़की को जीवित जमीन में गाड़ देते या पहाड़ पर से नीचे फेक देते थे। वे ऐसा इसलिए करते थे कि वे समझते थे कि लड़कियाँ उनकी बेइज़्ज़ती का कारण हैं। हज़रत मोहम्मद ने जहां अनेक प्रकार की बुराइयां दूर की वहां इस बुरी रस्म को भी मिटाने की अत्यधिक चेष्टा की।

हमारे रसूल के केवल एक पुत्री पैदा हुई। उनका नाम हज़रत फातेमा है। रसूल को अपनी पुत्री से उनके अनेक गुणों के कारण बेहद प्रेम था। वे कहा करते थे कि फातेमा मेरा ही एक टुकड़ा है। इस वाक्य से साफ स्पष्ट होता है कि जिस प्रकार रसूल अल्लाह हमारे आदर और सम्मान के योग्य हैं उसी तरह उनका टुकड़ा यानी फातिमा भी आदर और सम्मान के योग्य हैं इस वाक्य से एक अर्थ और भी निकलता है कि हज़रत मोहम्मद स0 अरब देश के उस अज्ञान और अत्याचार को भी मिटाना चाहते रहे हों जो महिला जाति के अनादर और दुःखों के कारण थे। वे हृदय से चाहते थे कि पुत्रियों के जीवित मारे जाने की बुरी रस्म समाप्त हो जाए। बीबी फ़ातेमा बहुत नेक और पवित्र महिला थीं। हम इस पुस्तक में उनके पवित्र जीवन चरित्र के विषय में संक्षेप में लिखेंगे जो सब मुसलमान औरतों बल्कि संसार की सभी महिलाओं के लिए नमूना बन सकीं हैं।

लड़कियो ! अच्छी तरह समझ लो, संसार में वही नेक और अच्छी औरत बन सकती है जो हज़रत फ़ातेमा के क़दम ब क़दम चलने की कोशिश करे और उनके चरित्र को अपनाए।

स्वयं तुम्हें चाहिए कि इस पुस्तक को पढ़ो और अपनी सहेलियों एंव अपने ख़ानदान की दूसरी औरतों को पढ़कर सुनाओ जिससे कि यह बातें सबके कानों तक पंहुच जाए।

''बीबी फातेमा का जन्म''

हज़रत मोहम्मद स0 ने 25 साल की आयु में मक्के की एक शरीफ और धनवान बीवी हज़रत खदीजा से शादी की। निकाह के बीस साल और ''बेसत'' के पांच साल बाद 20 जमादिउस्सानी को पैग़म्बर साहब की 45 साल की आयु में हज़रत फातेमा पैदा हुई। मगर जब हज़रत फातेमा पांच वर्ष की हुई तो आपकी

माता का देहान्त हो गया और उन्हें इस कम आयु में मां के मरने का दुःख भोगना पड़ा। मां के मरने का दुःख बच्चों के लिए बड़ा कठिन होता है परन्तु बीबी फातेमा के सिर पर प्रिय पिता का साया मौजूद था। सन्तान को अत्याधिक चाहने वाले पिता की गोद में पालन पोषण हुआ। हज़रत मोहम्मद उनकी देखभाल करते किसी समय उनको दुःखित नहीं होने देते थे। धर्म के कामों से जो समय बचता था वे उसे बीबी फ़ातेमा की देख भाल और तरबियत में लगाते थे। ख़ानदान में बहुत सी औरतें थीं मगर हज़रत ने अपनी बेटी की देखरेख अपने ही ज़िम्मे रखी थी, यहां तक कि उनके सिर में कंघी भी करते थे।

संक्षेप में हज़रत वे सारे काम भी करते थे जो मां ही के करने के हुआ करते हैं। बेटी भी अपने पिता से बेहद प्रेम करती और बचपन ही से बाप की सेवा करना अपना धर्म समझती थी।

एक बार ऐसा हुआ कि रसूल धार्मिक शिक्षा और उपदेश के लिए जा रहे थे कि रास्ते में एक नास्तिक ने आपके सिर पर धूल डाल दी। आप उसी हालत में घर वापस आए और जब बेटी ने बाप की यह दशा देखी तो बेचैन होकर रोने लगीं, पानी लाईं और सिर धुलाना शुरू किया। हज़रत ने जब प्यारी बेटी को रोते देखा तो कहा कि जाने पिदर (बाप की जान) दुखी न हो। खुदा तेरे बाप की रक्षा करेगा और शत्रुओं के अत्याचार से बचाएगा।

उस समय हज़रत फातेमा की आयु केवल 6 वर्ष की थी। परन्तु उस छोटी अवस्था में भी बाप की सेवा का उन्हें इतना ध्यान था।

प्यारी बच्चियों मां बाप की सेवा करना तुम्हारा कर्तव्य होना चाहिए।

विवाह के हालात

जब मक्के में नास्तिकों ने रसूल को बहुत सताया और धर्म के कामों में बाधा पड़ने लगी तो खुदा की आज्ञा से मक्के को छोड़कर मदीना की ओर चले गए जहां कि लोगों ने आपका हार्दिक स्वागत किया और हज़रत वहां सुख चैन से रहने लगे। यहां आने के दूसरे ही वर्ष हज़रत को बड़ी सफलता प्राप्त हुई। उसी काल में नास्तिकों और शत्रुओं ने मक्के से आकर युद्ध किया मगर आप विजयी रहे। इसके बाद इस्लाम धर्म फैलने लगा। हज़रत मोहम्मद के चचेरे भइयों में एक भाई हज़रत अली भी थे जो हज़रत अबूतालिब के पुत्र थे जिनसे हज़रत बहुत प्रेम करते थे क्योंकि बचपन ही से उनको लेकर हज़रत मोहम्मद ने पाला था। हज़रत अली भी अपने भाई से बहुत प्रेम करते थे और हर कठिनाई में उनकी सहायता करते थे और सदा उनके पसीने की जगह अपना लहु बहाने के लिए तैयार रहते थे।

उन्होंने हर एक युद्ध में दुश्मनों का सामना किया और उन्हें पराजित किया। इतिहास से ज्ञात होता है कि जितनी लड़ाइयां नास्तिकों से हुई थीं वे सभी हज़रत अली के हाथों विजित हुई।

जनाब फातेमा विवाह योग्य हुईं तो अरब देश के बड़े मालदार लोगों ने शादी करने का अनुरोध किया परन्तु हज़रत ने किसी को उत्तर न दिया।

एक दिन हज़रत के कुछ संगी साथी बैठे आपस में बातचीत कर रहे थे। हम सब ने हज़रत फातेमा से विवाह के लिए अनुरोध किया मगर हज़रत इस बारे में मौन रहे। केवल हज़रत अली ने अब तक इसके लिए कुछ नहीं कहा। हम तो यह समझते हैं कि हज़रत ने अली ही को फ़ातेमा के लिए चुन रखा है। यह कह कर सब लोग हज़रत अली के पास आये जो उस समय एक आदमी के बाग़ में मज़दूरी पर पानी भर रहे थे। हज़रत अली ने उन लोगों को देखकर कहा कि आप लोग कैसे आए हैं ? उन लोगों ने उत्तर दिया कि या अली कौन सी ऐसी खुबी है जो आप मे नही है फिर भी आपने अब तक विवाह करने के लिए हज़रत मोहम्मद से अनुरोध नहीं किया ? हमें पूरा विश्वास है कि हज़रत मोहम्मद जो आपसे बहुत प्रेम करते हैं, आपके निवेदन को स्वीकर अवश्य कर लेंगे। उन सबके कहने पर हज़रत अली उठे और हज़रत के पास आए और अस्सलाम अलैकुम या रसूल अल्लाह! कहकर सिर झुकाकर बैठ गए। किन्तु मुह से कुछ न कह सके।

हज़रत ने पूछा—ऐ अली! ऐसा मालूम होता है कि तुम किसी ज़रूरी काम से आए हो। मुझसे बयान करो। आज्ञा मिलते ही आपने निवेदन किया कि आप ही ने मुझे बचपन से अपने साथ रखा और माता पिता से ज़्यादा प्रिय माना। अब निवेदन है कि दामादी का सम्मान भी मुझे दें। यह सुनते ही हज़रत का चेहरा

प्रसन्नता से खिल उठा और तब हज़रत ने मुस्करा कर कहा या अली तुम्हारे पास कुछ है जो महरे फातेमा में अदा करो ताकि मैं तुम्हारा निकाह फातेमा के साथ कर दूँ।

हज़रत अली ने कहा–आप खूब जानते हैं कि दुनिया के माल से मेरे पास क्या है? केवल एक तलवार, एक ऊँट और एक जेरह है। इन तीन चीज़ों के अलावा कुछ नहीं।

हज़रत ने कहा–तलवार से तुम खुदा की राह में जेहाद (युद्ध) करते हो, ऊँट भी ज़रूरी है उसपर अपना सामान लादते हो और पानी भर कर अपनी रोज़ी कमाते हो। तुम ऐसे बहादुर के लिए जिरह की ज़रूरत नहीं। जाओ और उसे बेच डालो और उसकी कीमत लेकर मेरे पास आओ।

हज़रत अली यह आज्ञा पाते ही बाज़ार की ओर गए और ज़िरह को 480 दरहम में बेच कर हज़रत के पास आए और वह रकम फातेमा के महर में अदा कर दी।

हज़रत ने बेलाल को बुलाया जो आपके मोअज्जिन (अज़ान देने वाले) थे और उन्हें वह देरहम देकर फरमाया, जाओ बाज़ार से इत्र, कपड़े और रोजाना की ज़रूरत का घरेलू सामान खरीद लाओ। इस मामूली इन्तेज़ाम के साथ हज़रत ने अली और फ़ातेमा का निकाह पढ़ दिया।

लड़कियो ! तुम कभी यह न समझना कि हज़रत मोहम्मद ने अपनी प्यारी बेटी को बहुतदहेज देकर बिदा किया होगा। हम नीचे बीबी फातेमा के दहेज की वे चीजें लिखते हैं जो उनकी मेहर को पैसे से ही मंगवाई गई थीं :

एक कुर्ता, एक मक़ना (मुंह ढापने का रूमाल), एक काले रंग की चादर, दो तोशकें जिनमें खजूर के पत्ते और दुम्बे के बाल भरे हुए थे। चार चमड़े के तकिये जिनमें एक खुशबूदार घास भरी थी। एक ऊनी पर्दा, एक बैठने के लिए चटाई, एक तांबे का कटोरा, लकड़ी का एक कासा (प्याला), दूध रखने के लिए, चमड़े का एक बर्तन, पानी पीने के लिए एक घड़ा, चन्द मिट्टी के प्याले, एक लोटा, एक मश्क पानी भरने के लिए, और एक चक्की आटा पीसने के लिए।

बस यह कुल सामान था जो हजरत ने अपनी प्यारी बेटी को देकर विदा किया और दुआ की कि बारे इलाहा ! तू उन लागों को बरकत दे जिनके पास ज्यादातर मिट्टी के बर्तन हों और यह भी कहा सबसे अच्छी औरत वह है जिसका दहेज सबसे कम हो। लड़कियो ! एक बात और समझ लो बीबी फातेमा अरब की सबसे ज़्यादा मालदार मां की बेटी थी लेकिन जब नेक दिल बीबी जनाब खदीजा ने अपना सारा धन रसूल को दे डाला तो हज़रत ने उस धन को इस्लाम के फैलाने और खुदा की राह में दे दिया था।

इससे यह शिक्षा प्राप्त होती है कि दहेज की बेकार चीज़ों के बदले धन को नेक कामों में खर्च करना मनुष्य का कर्तव्य हैं।

आं हज़रत ने विदाई के समय कहा कि फ़ातेमा अधिक नेक और धार्मिक पत्नी है उसे संसार और उसके मनोरंजन से कोई सम्बन्ध नहीं इनसे किसी बात में इख़्तेलाफ न करना और कभी किसी चीज की मांग न करना और हज़रत अली से कहा, ऐ अली फातेमा बहुत नेक पत्नी हैं इनके साथ हमेशा सरलता और दया का व्यवहार करना।

फिर दुआ की कि खुदा तुम दोनों की सन्तान को पवित्र और नेक रखे। मैं उसका दोस्त हूँ जो तुम्हारा मित्र है और उसका शत्रु हूँ जो तुम्हारा शत्रु है। मैं तुम दोनों को खुदा के हवाले करता हूँ।

रसूल की बेटी की विदाई में ऐसी शोभा हुई कि रिश्तेदार और दोस्त बरात के साथ थे। अपने लोगों के हाथों में तलवारें थीं और वे लोग तकबीर यानी ''अल्लाहो अकबर'' कहते जाते थे इसी लिए सुन्नत है कि बिदाई के समय तकबीर कही जाए।

लड़कियो ! तुम्हारे घरों में जब किसी का विवाह हो और कन्या बिदा होकर आती है तो ससुराल वाले प्रसन्न होते हैं और घर में हंसी खुशी की बातें होती हैं लेकिन खुशी की धुन में ऐसी बातें भी की जाती हैं जो धर्म और अख़लाक (शिष्टाचार) की नज़र में खटकती हैं। मगर जब तुम यह सुनोगी तो तुम्हें विशेष आश्चर्य होगा कि बीबी फातेमा जब विदा होकर अपने पति के घर आई तो यहां कोई उत्सव न हुआ और न किसी मनोरंजन का आयोजन किया गया। बल्कि इन दोनों खुदा के बन्दों ने विदाई के बाद तीन दिनों तक बराबर खुदा को धन्यवाद दिया और व्रत रखा और तीन रात नमाज़ पढते रहे। हमारे यहां जब शादियाँ होती हैं तो बराबर देखने में यही

आता है कि हफ़्तों पहले से नमाज़ छोड़ दी जाती है और शादी के बाद तो नमाज़ का ध्यान कठिनाई से आता है।

प्यारी लड़कियो ! तुम्हें अपनी बीबी फातेमा के जीवन चरित्र से शिक्षा लेनी चाहिए। यदि तुम उनके रास्ते पर चलोगी तो खुदा और रसूल खुश होंगे और तुम्हारे मन को भी प्रसन्नता मिलेगी कि तुमने एक अच्छा कार्य किया।

तुम्हें यह भी अनुभव हुआ होगा कि विवाह के अवसर पर भिन्न–भिन्न प्रकार की रस्में की जाती हैं जो हमारे धार्मिक गुरूजनों के यहां दिखाई नहीं पड़ेंगी। अब तुम्हीं इन्साफ करो कि शादी विवाह के अवसर पर बेकार रस्मों का बरतना हमारे रसूल की प्यारी शिक्षा के विरूद्ध है कि नहीं।

बताओ ऐसी दशा में तुम्हारा क्या कर्तव्य होना चाहिए ?

जब हज़रत फातेमा बिदा होकर अपने शौहर के घर आईं तो वह सन हिजरी का दूसरा साल था और ग्यारह हिजरी में आपका देहान्त हुआ इस प्रकार करीब करीब आठ वर्ष और छः महीने तक आपने हज़रत अली के घर में जीवन बिताया इस थोड़ी सी मुद्दत (अन्तराल) में बहुत सी कठिनाइयों को नेहायत ख़ुशी, सन्तोष और सब्र से सहन किया। हज़रत अली के मरतबा और राहत और आराम का ख्याल रखा और एताअत और फरमाँबरदारी को अपना कर्तव्य समझाा और घर के सब काम काज, हंसी खुशी अंजाम दिये (पूरे किये) और अपने बच्चों की परवरिश नरमी, मोहब्बत और दिल जोई से की। बीबी फातेमा के इन्तेक़ाल के बाद किसी व्यक्ति ने हज़रत अली से पूछा कि हज़रत फातेमा का बर्ताव आपके साथ कैसा था ?

हज़रत अली यह सुनते ही रोने लगे और कहा कि वे स्वर्ग का एक खुशबूदार फूल थीं जिसके मुरझाने पर भी उसकी खुशबू से मेरा दिमाग़ अब तक महक रहा है।

तुम यह समझती होगी कि बीबी फातेमा ने ससुराल में आराम उठाया होगा और बहुत सुख से जीवन गुजारा होगा परन्तु ऐसा नही हुआ। इस घर की हालत भी बिल्कुल रसूल के घर की सी थी, घर का कुल काम सैयदा अपने हाथें से करती थी। चक्की पीसती, झाड़ू देती, रोटी पकाती, और बच्चों को नहलाती धुलाती थीं जब कभी कोई बच्चा रोता तो खुद ही बहलाती भी थीं घर का काम करते करते थक तो जाती थीं मगर रोजाना का कोई काम बाक़ी नहीं रहने पाता था।

इमाम हसन फरमाते हैं कि घर के अन्दर का सब काम मेरी मां करती थीं और बाहर का काम मेरे पिता करते थे। अम्मां काम की ज़्यादती से घबराती न थी और न किसी पड़ोस की औरत से सहायता लेती थीं, यहां तक कि अपने खानदान की औरतों को भी तकलीफ़ न देती थीं।

लड़कियो ! इससे केवल यही नतीजा नहीं निकलता कि बीबी फातेमा मेहनत पर सब्र करतीं थीं बल्कि इन बातों से खानादारी के फराएज़ (घर के ज़रूरी काम) , शौहर को आराम पँहुचने और बच्चों का पालन पोषण और देखभाल की अहमियत भी मालूम होती है।

चक्की पीसने और पानी भरने से जब दोनों हाथ जख़्मी हो गए तो एक रोज़ आपने हज़रत अली के कहने से हज़रत मोहम्मद से बिनती की कि बाबा!

मुझे एक कनीज़ दे दीजिए। आँ हज़रत ने फिज़्ज़ा को उनका हाथ बटाने के लिए साथ कर दिया। कनीज़ (लौन्डी) मिलने पर भी बीबी फातेमा ने घर का कुल काम उनपर नहीं छोड़ा बल्कि फिज़्ज़ा से कहा कि घर का सब काम एक रोज़ मैं करूंगी और एक रोज़ तुम करो लेकिन वाक़ेयात के देखने से ऐसा मालूम होता है कि अकसर खुद सब काम किया करती थीं।

एक बार ऐसा हुआ कि आपके दोनों बच्चे हसन और हुसैन बीमार हो गए। आपने खुदा से मन्नत मानी, अगर बच्चे स्वस्थ हो गए तो मैं तीन रोजे रखुंगी। यही नीयत हज़रत अली ने भी कर ली। खुदा ने अपने फज़्ल (दया) से बच्चों को अच्छा कर दिया तो उन्होंने अपनी अपनी मन्नत बढ़ाने के ख्याल से रोज़े की नीयत कर ली। उस दिन का वक़्या है कि जनाबे सय्यदा ने जौ कूट पीसकर रोटियां तैयार की और जब रोजा खोलने का वक्त आया तो एक ग़रीब ने दरवाज़े पर सवाल किया ऐ एहलेबैते–रसूल मैं मिस्कीन (दीन) हूँ और भूखा हूँ। खुदा के लिए मुझे कुछ खाने के लिए दो। हज़रत अली ने अपने सामने की रोटी उठा कर मांगने वाले को दे दी। इसके बाद

तो फिर सबने अपने अपने हिस्से की रोटियां गरीब को दे दीं और सिर्फ पानी से रोज़ा खोल लिया और दूसरे रोज़े की नीयत कर ली। दूसरे दिन भी बीबी सय्यदा ने जौ कूट पीस कर आटा तैयार किया और उसकी पांच रोटियां तैयार की। जब रोज़ा अफ्तार करने का वक्त आया और सब एक जगह जमा हुए तो ठीक उसी वक्त किसी ने दरवाज़े पर पुकार कर कहा ऐ ऐहलेबैत ! मैं यतीम हूँ। मुझे खाना दो। आज भी सबने कल की तरह अपनी अपनी रोटियाँ देकर पानी से अफ्तार कर लिया और तीसरे दिन के लिए भी रोज़े की नीयत कर ली। तीसरे दिन फिर जनाबे सय्यदा ने उसी मेहनतो मशक्कत के बाद रोटियां पकाईं और जब सब घर वाले रोज़ा खोलने बैठे तो एक आदमी ने सवाल किया (मांगा) कि मैं एक कैदी हूँ और भूखा हूँ मुझे कुछ खाने को दो। आज तीसरे दिन भी सबने रोटियां उसके हवाले कर दी और सिर्फ पानी ही से रोज़ा खोला मगर भूख की वजह से सब पीले पड़ गये थे और कमज़ोरी के कारण उनके बदन कांप रहे थे। चौथे रोज़ जब रसूलुल्लाह घर में आए और उन लोगों की यह हालत देखी तो आंखों में आंसू भर लाये और खुदा से दुआ की। खुदा ने उन लोगों के लिए जन्नत से खाना भेजा।

लड़कियो ! देखो, इस एक वाकये से बहुत से नतीजे निकलते हैंः—

(1) तीनों दिन बीबी सय्यदा ने खुद ही जौ कूटा पीसा, छाना गूंधा और रोटियां पकाई।

(2) न भूख की शिकायत की और न रोज़े की हालत में काम करना छोड़ा।

(3) फिज़्ज़ा घर में मौजूद थी मगर खुद अपने ही हाथों सारे काम किये।

(4) हज़रत हसन और हज़रत हुसैन ने भी जो बच्चे थे लगातार उसी हालत में रोजे रक्खे। यद्यपि अभी बुखार से उठे थे और कमज़ोर थे मगर मां ने मना नहीं किया।

(5) रोटियां देते वक्त भी मां ने हाथ नहीं रोका कि प्यारे बच्चों तुम बहुत कमज़ोर हो, अपनी अपनी रोटियां खा लो हम लोग तो रोटियां दे ही रहे हैं कोई और मां होती तो अवश्य बच्चों को रोक देती मगर सय्यदा ने खुदा की राह में खैरात करने से नहीं रोका।

अब तुम्हीं बताओ कि रमज़ान शरीफ के महीने में बिना किसी उचित कारण के रोज़े न रखना बीबी फातेमा के अमल (कर्म) और तालीम (शिक्षा) के खिलाफ़ है या नही ?

लड़कियो ! इस वाकये के सम्बन्ध में एक बात और सोचने योग्य है कि हम लोग जब खुदा न करे कभी संकट में पड़ते हैं तो तरह—तरह की मन्नतें मानते हैं। अक्सर कम समझ और जाहिल लोग गंडे टोने और झाड़ फूँक के लिए दौड़ते फिरते हैं मगर रसूल की चहेती बेटी और खुदा की खास दासी जनाबे फातेमा जब परेशान होती थीं तो केवल अपने पैदा करने वाले और पलने वाले ही की ओर झुकती थीं, उसी से विनती करती, दुआएं मांगती और उसी से करूणा की आशा करती। मन्नत भी मानती तो अल्लाह ही की इबादत की। खुदा की रहमत का शुकराना बीबी फात्मा नमाज और रोज़े कीसूरत में पेश करती थीं। खुदा तुम्हें भी ऐसी ही तौफीक दे! आमीन !!

मेहरबान बाप की नसीहत (उपदेश) और बेटी का अमल (पालन)

बीबी फात्मा ने कभी हज़रत अली से अच्छे, कीमती कपड़ों और गहनों की मांग नहीं की। इसीलिए विदाई के समय हज़रत मुहम्मद ने बेटी से कहा था कि फात्मा! अली से कभी किसी चीज़ की मांग न करना क्योंकि अली का हाथ माले दुनिया से खाली है।

लड़कियो ! तुम यह कभी न सोचना कि रसूलल्लाह गरीब थे या हज़रत अली फकीर थे या बीवी फातमा किसी निर्धन मां की बेटी थी। कदापि ऐसा नहीं है। देखो, रसूल के साथियों में तीन सौ सहाबी ऐसे थे जिनका खाना पीना रसूल अल्लाह के ज़िम्मे था। रसूल और उनका घराना अरब देश में मालदार समझा जाता था। यह लोग कबील—ए—कुरैश के सरदार थे मगर खल्के खुदा का इतना ख़याल था कि अपने माल से खुद फायदा उठाना कभी पसन्द नही करते थे बल्कि गरीबों, विधवाओं और अनाथों के पालन पोषण करने में खर्च करते थे। हज़रत अली ने तमाम उम्र जौ की रोटी खाकर बसर की जब कि गरीब न थे। एक बार आप ने अपना एक बाग बारह हज़ार दिरहम पर नीलाम किया। चार हज़ार दिरहम उस व्यक्ति को दे दिये जिसकी आवश्यकता पूरी करने के लिए आपने बाग नीलाम किया था। मदीने के गरीबों को जब मालूम हुआ कि आज हज़रत अली ने

बाग नीलाम किया है। तो सबने आकर घेर लिया। हज़रत अली ने वह आठ हज़ार दिरहम भी उनमें बांट दिये और जब घर आए तो एक दिरहम भी पास न था।

हज़रत फातमा की मां जनाबे खदीजा भी मक्के में सबसे मालदार औरत थीं। उनका बहुत बड़ा व्यापार चलता था। जब उनके ख़ज़ाने की अशर्फियाँ निकाल कर ढ़ेर की जाती थीं तो एक टीला सा बन जाता था और इधर के लोग उधर दिखाई नहीं देते थे मगर उन्होंने जब अपनी पसन्द से हज़रत मुहम्मद से शादी कर ली, तो रसूलल्लाह के हुक्म से अपना सारा माल खुदा की राह में और इस्लाम फैलाने में व्यय कर दिया।

ऐसे मां बाप की बेटी ने कभी अपनी गरीबी की शिकायत नहीं की बल्कि हर हाल में खुदा का शुक्र अदा किया। सय्यदा को दुनिया के आराम और आसाइश से नफरत थी। बचपन ही से न अच्छे अच्छे कपड़ों का शौक था, न गहनों का, हालांकि आमतौर से सभी लड़कियों को गहनों का बड़ा शौक होता है।

एक बार ऐसा हुआ कि हज़रत रसूले खुदा बीबी सैय्यदा की शादी के बाद उनके घर में तशरीफ लाए मगर कुछ देखकर फौरन ही वापस चले गये। जनाब फातमा ने ग़ौर करना शुरू किया कि आज कौन सी ऐसी बात है जो बाबा को भली नहीं लगी है। आप को तुरन्त पता चल गया कि आज उन्होंने प्रतिदिन के विरूद्ध सोने का एक गहना पहन रक्खा है। इसका ध्यान आते ही तुरन्त गहना उतार कर मस्जिद में भेज दिया और कहला भेजा कि बाबा आप इसकी कीमत मदीने के गरीब लोगों में बांट दीजिए। रसूलल्लाह बेटी की इस बात पर अतयन्त प्रसन्न हुए और दोबारा घर में आए तो बेटी को सीने से लगा कर दुआएं दी और फरमाया "बेटी! तुझे दुनिया की आराइश (साज सज्जा अलंकार) से क्या काम, तेरे लिए तो खुदा ने आखिरत का आराम मुहय्या (उपलब्ध) कर रखा है।''

लड़कियों ! तुम यह समझी होगी कि इसके लिखने से मेरा यह मतलब है कि तुम भी अच्छे कपड़े और बहुमूल्य गहने पहनना छोड़ दो, मगर ऐसा नहीं है। यह तो बीबी फातमा का असाधारण अमल था। अलबत्ता नफीस कपड़े और कीमतीं गहने पहन कर तुम्हें गुरूर न करना चाहिए बल्कि यह ध्यान रहे कि बीबी फात्मा किस किस तरह से गरीब, बेकस (बेसहारा), विधवा और यतीमों की सहायता किया करतीं थीं और हाँ यह भी ध्यान रहे कि गहने कपड़े से इज्ज़त नहीं होती बल्कि इल्म (ज्ञान) और अखलाक़ से इज़्ज़त होती है।

सच तो यह है कि औरत का जेवर उसकी नेकी, रहमदिली (तरस), अख्लाक, हुनर (शिल्प), सलीकामन्दी (शिष्ट) है और उसकी ''इज़्ज़त'' उसकी ''इसमत'' है।

बीबी फ़ात्मा के और दूसरे नाम

बीबी फात्मा के बहुत से नाम और अल्काब (उपनाम) हैं। बिन्ते रसूल (रसूल की बेटी), बिज़अतुर्रसूल (रसूल का टुकड़ा), ज़हरा (कली, उजागर), ताहिरा (पवित्र), मासूमा (निष्पाप), सिद्दीका (सत्यवन्ती), मुहद्दिसा (बात बताने वाली), ज़कीया (पुण्यात्मा), राज़िया (खुदा की चाहने वाली, उससे खुश रहने वाली), मरज़ीया (खुदा की चहीती, जिससे खुदा खुश रहे), हौरा, बुतूल (कुमारी, जो मासिक–धर्म से पवित्र रहे), सय्यद–ए–निसाइल आलमीन सारे संसारों की महिलाओं की प्रमुख।

फ़ात्मा के मानी हैं बुराई से बिल्कुल दूर। बिन्ते रसूल इसलिए कहते हैं कि आप रसूल की बेटी हैं। बिज़अतुर्रसूल इसलिए कहते हैं कि खुद हज़रत रसूले खुदा ने फरमाया कि फ़ात्मा बिजअतुमिन्नी फ़ात्मा मेरा ही एक अंश है। बिज़आ के मानी हैं टुकड़ा, अंश। इससे मतलब यह है कि आप रसूल अ0 ही का एक अंश हैं। ज़हरा वह है जिससे रौशनी जाहिर हो। किताबों में है कि जब आप नमाज़ के लिए खड़ी होतीं थीं तो ज़मीन से आसमान तक नूर और रौशनी का स्तम्भ बन जाता था। हज़रत मुहम्मद बीबी फात्मा को उनके सौन्दर्य के कारण जहरा कह कर भी अक्सर पुकारते थे। ताहिरा आपको इस लिए कहते हैं कि खुदा ने आपकी तहारत (पवित्रता) की गवाही कुरआन में दी है। आयते ततहीर उनकी तहारत का एलान है। मासूमा इसलिए कि ज़िन्दगी में कभी छेटे से छोटे गुनाह का ख्याल तक नहीं किया। सिद्दीक़ा इस लिए कहते है। कि सारी उम्र में कभी सिवा सच के कुछ नहीं कहा। आप की सच्चाई की गवाही कुरआन ने दी है। जब नजरान के ईसाइयों से और रसूल अल्लाह से इस्लाम और ईसाइयत के बारे में बहस हुई और वह किसी प्रकार के तर्क से कायल न

हुए तो रसूल खुदा ने खुदा के हुक्म से कहा कि आओ हम अपने बच्चों को बुलाएं और तुम अपने बच्चों को, हम अपनी औरतो को बुलाए और तुम अपनी औरतों को, और हम अपने नफ्सों का बुलाएं और तुम अपने नफ्सों को, और हम झूठो पर अल्लाह की लानत भेजवाएं इस प्रकार के मुक़ाबले को 'मुबाहिला' कहते हैं। दूसरे दिन रसूलल्लाह हज़रत हसन, हुसैन, हज़रत फात्मा और हज़रत अली को अपने साथ लेकर मैदान में आ गये मगर जब उधर ईसाइयों ने उनके नूरानी चेहरे देखे तो मुबाहले से इन्कार कर दिया और इस प्रकार इन सब की सच्चाई का कलमा पढ़ लिया जिसमें बीबी फात्मा भी शामिल थीं। 'मुहद्दिसा' इसलिए कहते हैं कि फरिश्ते आपसे बातें करते थे। 'ज़कीया' इसलिए कि आपके कमालाते नफ्स में सदैव उन्नति होती थी। रज़िया इसलिए कि अल्लाह की रजामन्दी से आप राज़ी रहती थीं। 'मरज़िया' इसलिए कहा जाता था कि आप अल्लाह को बहुत पसन्द थीं। 'हौरा' यानी सदुगुणों और नैतिकता में हूरों के समान थी। 'बुतूल' अर्थात सदैव पवित्र और इबादत के काबिल रहने वाली थीं। 'सय्यद–ए–निसाइल आलिमीन' का लकब रसूल्लाह ने आपके इल्मो फज्ल (ज्ञान और उसमें बढ़ा होना) के कारण दिया था जिसके अथ्र होते हैं दुनिया की तमाम औरतों की सरदार।

आपकी कुन्नियत उम्मुल हसन (हसन की माँ), उम्मुल हुसैन (हुसैन की माँ), उम्मुल अइम्मा है अर्थात् इमामों की मां (इमाम हसन से लेकर बारहवें इमाम तक)। उम्मुल हसनैन कह कर हज़रत अली पुकारते थे यानी हसन और हुसैन की मां। हज़रत रसूले खुदा ने उन्हें एक खिताब और दिया था और अक्सर आप उन्हें उम्मे अबीहा कहते थे यानी अपने बाप की मां। इस से हज़रत का मतलब है कि फात्मा की जात से बेटी की मुहब्बत और मां की शफ्क़त दोनों मिलती है।

फ़ात्मा ज़हरा का एख़्लाक़ (शिष्टाचार)

यह तो एक मामूली सी बात है कि बीबी सय्यदा[स०] ने कभी किसी सायल (मांगने वाले) को अपने दरवाज़े से खाली हाथ नहीं फेरा और जब किसी ने कोई सवाल किया तो आपने तुरन्त उसे पूरा कर दिया। उन्होंने सदैव दूसरों की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकताओं से अधिक महत्व दिया। इसके अलावा और बहुत सी बातें हैं जिनसे उनके अख़्लाक़ का पता चलता है। आप सदा नर्मी और मेहरबानी से बातें करती थीं और कभी गुस्सा न आता था। जो भी उनके घर आता चाहे वह काफिर ही क्यों न हो, उसका वह आदर सत्कार करती थीं।

एक बार की बात है कि अरब के किसी राजा की लड़कियां कैद होकर के रसूलुल्लाह के पास लाई गईं। हज़रत ने उन्हें जनाबे सय्यदा के पास भेज दिया राजा की बेटियां जब रसूल की बेटी के घर आईं तो यहां वह शानों शौकत कहां थी जिसकी वह आदी थीं। इनके घर में अच्छे अच्छे कालीन थे न साफ शफ्फाफ फर्श। घर में सिर्फ ऊँट की एक खाल थी जिस पर दिन को ऊँट खाना खाता और रात को वही हसनैन के लिए बिछौना हो जाता। बीबी फात्मा ने राजा की बेटियों के लिए अपनी चादर बिछा दी। इस व्यवहार का उनपर यह असर हुआ कि वह सब मुसलमान हो गईं।

लड़कियो ! हज़रत फात्मा की नेकी और अख्लाक के वाकयात से किताबें भरी पड़ीं हैं मगर हमने मिसाल के तौर पर उनके बे–मिसाल अख्लाक का यह एक वाकया पेश किया है जिससे तुम यह अन्दाज़ा कर सको कि धन दौलत और शान–शैकत से नहीं, बल्कि अख्लाको मुहब्बत और मुरौवत से दिल जीते जाते हैं।

इबादते खुदा (ईश्वर भक्ति) का शौक

इसके बारे में हम पहले भी कुछ लिख चुके हैं कि जनाबे सय्यदा को नमाज़, रोज़े और खुदा की इबादत से बहुत मुहब्बत थी। हसन बसरी कहते हैं कि हज़रत फात्मा इबादत में सबसे आगे थीं। नमाज़ में इतनी देर तक ख़ड़ी रहती थीं कि आप के पांव सूज जाते थे। हज़रत इमाम हसन फरमाते हैं कि मेरी मां जुमा की रात को रात भर नमाज़ें पढ़ती थीं यहां तक कि सवेरा हो जाता। उस वक्त पास–पड़ोस वालों के लिए दुआ करतीं मगर अपने वास्ते दुआ नहीं करती थीं। एक रोज़ मैंने पूछा, "ऐ अम्माँ ! आप दूसरों के लिए जिस तरह दुआ करती हैं अपने लिए क्यों नहीं करतीं?" जवाब दिया कि बेटे "अज्जार सुमद्दार" यानी अव्वल पड़ोसी का हक है बाद में घर वालों का।

इबादत में खौफे–खुदा (भगवान का डर) से यह हालत होती थी कि आप का सारा बदन

कांपने लगता था और चेहरे का रंग पीला पड़ जाता था। हर वक्त ज़िक्र खुदा (ईश्वर की याद, ध्यान) में गुजरता था। अगर बच्चे सो जाते थे तो आप पंखा झला करतीं और कुरआन भी पढ़ा करती अक्सर रोटी पकाते समय भी कुरआन पढ़ा करतीं। इसका मतलब यह है कि ज़िन्दगी का कोई वक्त यादे खुदा से खाली नहीं रहता था। हमारे यहां की औरतें ऐसे वक्त में अगर कोई पास हुआ तो इधर उधर की व्यर्थ बातें किया करती हैं और अगर अकेली हैं तो गुनगुनाया करती हैं।

लड़कियो! जनाबे फातमा[स०] की इतनी इबादत का मतलब यह है कि हमें पैदा करने और पालने वाले का शुक्रिया अदा करना चाहिए, हमारी इबादतें उसका शुक्रिया है। वरना हमारी नमाज़ों और इबादतों की अल्लाह को कोई आवश्यकता नहीं है।

रिज़ाए इलाही (भगवान की खुशी)

जनाबे सय्यदा ने अपने हुस्ने–अमल से अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल कर ली थी। जिसका सुबूत यह है कि सय्यदा की कोई बात कभी ख़ाली नहीं गई जिसके लिए उसकी बारगाह में दुआ की हो वह पूरी ज़रूर हुई।

रमज़ान का महीना खत्म हो रहा था और ईद की तैयारी की जा रही थी जो मुसलमानों के लिए बड़ा त्योहार समझा जाता है और जिसमें हर अमीरो गरीब नए कपड़े पहनता है। हज़रत हसन और हज़रत हुसैन की, जिनकी उम्र अभी छोटी थी, जब मालूम हुआ कि कल ईद का दिन है तो दौड़े हुए अपनी मां के पास आए और अपने लिए अच्छे–अच्छे कपड़ों की फरमाइश (चाहत) की। इस अवसर पर मां का दिल ज़रूर बेक़रार हो गया होगा इसलिए कि घर में नए–नए लिबास कहां थे। बच्चों की फ़रमाइश सुनकर बीबी सय्यदा चुप हो गई मगर जब बच्चों ने इसरार किया तो आपने फ़रमाया, "तुम्हारे कपड़े दर्जी के पास हैं।" बच्चे मां की बात से मुतमइन होकर सो गये। रात गुजरती रही और ईद की सुबह आई। किसी ने दरवाज़े पर पुकार कर कहा, "बच्चों का दर्ज़ी कपड़ लाया है।" बच्चे खुश होकर बाहर गये और कपड़े लेकर वापस हुए। मां ने यह देखकर शुक्र का सज्दा किया और बच्चों को नहला–धुला कर, और नये कपड़े पहना कर मस्जिद में भेज दिया। चूंकि बीबी फात्मा की जबान से निकल गया था कि तुम्हारे कपड़े दर्जी के पास हैं खुदा ने उसको सच कर दिखाया और एक फ़रिश्ते को हुक्म दिया कि जन्नत से हसन और हुसैन के लिए कपड़े ले जाए और कहे कि दर्ज़ी कपड़े लाया है।

लड़कियो ! बीबी सय्यदा की यह फज़ीलत (उत्कृष्टता, श्रेष्ठता) और यह रूत्बा (कोटि) खुदा की खुशनूदी के कारण प्राप्त हुआ जिसके शुक्राने (धन्यवाद) में वह सदैव इबादते खुदा और इताअते रसूल (रसूल का आज्ञा पालन) में तल्लीन रहती थीं।

इस वाकए के अलावा बहुत से ऐसे दूसरे वाक़ेयात भी हैं जिनके द्वारा और भी उदाहरण पेश किये जा सकते हैं मगर इससे शिक्षा प्राप्त करने औरउस पर अमल (पालन) करने के लिए केवल यही एक वाकया काफ़ी है। खुदा करे तुम्हारे दिलों में भी इबादते–खुदा और इताइते–रसूल का जज़्बा (भावा) जागृत हो।

गरीबी में सन्तोष

बीबी फ़ात्मा ने हमेशा अपनी आवश्यकताओं पर दूसरों की आवश्यकताओं को महत्व दिया। अपना खाना भूखों को खिला देती थीं और भूखी रहा करती थी। हम एक वाक़ेया ऐसा लिखते हैं जिससे मालूम होगा कि बीबी फात्मा को गरीबी और निर्धनता, और भूख और प्यास की हालत में भी कितना इतमीनान रहता था। न चेहरे से परेशानी ज़ाहिर होती थी न ज़बान से अपनी हालत दूसरों को बताती थीं।

(जारी..........................)

(पेज नं0 6 का बक़िया...................)

महिमा, के सामने अपने फ़र्ज़ (कर्त्तव्य में) कमी का एहसास हुआ। यूँ जुर्म को मानते हुए माफ़ी चाही, तो कहा *"असतग़फ़िरूल्ला–ह रब्बी व–अतूब इलैह"*, माफ़ी चाहता हूँ अल्लाह से जो मेरा पालनहार है और उसके दरबार में तौबा (पछताव) करता हूँ । उन गुनाहों की माफ़ी की दरख़्वास्त करने के साथ फिर एक बार उसकी अज़मत व बुजुर्गी पर माथा ज़मीन पर रखने की ज़रूरत महसूस हुई और दूसरा सजदा किया और फिर पहले की तरह उसकी ऊँचाई ज़ाहिर की।

(जारी...................)